

# डॉ. डेविड बाउर, प्रेरक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 19, जेम्स 1:22-27

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 19, जेम्स 1:22-27 है।

हम अब जेम्स 1:22 के साथ शुरुआत करने के लिए तैयार हैं। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, यह वास्तव में जेम्स 1:2 से 27 तक की दूसरी मुख्य इकाई में तीसरी उप-इकाई है।

बस हमें याद दिलाएं कि जेम्स 1, कम से कम मेरे विचार से, किताब के बाकी हिस्सों के लिए एक तरह के प्रस्ताव के रूप में कार्य करता है जिसमें वह सामान्य तरीके से किताब के लगभग सभी प्रमुख विषयों का परिचय देता है, जिसके बाद वह आगे बढ़ेगा पुस्तक के शेष भाग को अध्याय 2 से 5 में विकसित किया जाना है। लेकिन वह इन मुख्य विषयों को अध्याय 2 के भीतर एक रूपरेखा के भीतर प्रस्तुत करता है। 1:2 से 15 में, रूपरेखा वास्तव में ईसाई जीवन की विजय और परीक्षणों के माध्यम से, उस ज्ञान के माध्यम से है जो ईश्वर से आती है। यहां, 1:16 से 27 में, वह शब्द की शक्ति के माध्यम से धोखे पर ईसाई जीवन की विजय के बारे में बात करता है।

इसलिए, जब हम श्लोक 22 से 25 तक आते हैं, जिसका संबंध वचन के कर्ता होने के इस व्यवसाय से है और यहां केवल स्वयं को धोखा देना नहीं है, जिसका वास्तव में वचन से ही संबंध है, अन्य चीजों के संबंध में नहीं। श्लोक 16 से 18 में और श्लोक 19 से 21 में भी अन्य तत्वों के संबंध में शब्द के बारे में बात की गई है और फिर श्लोक 26 से 27 में भी एक अर्थ में बात की जाएगी। यहाँ, वह शब्द के बारे में इस प्रकार बात करता है, और वह इस अंश को यहाँ प्रस्तुत करता है।, जैसा कि मैं कहता हूँ, धोखे से बचने और ज्ञान को अपनाने के साधन के रूप में।

बेशक, यहां आसपास के पैराग्राफों में इस पर जोर दिया गया है। लेकिन हमने शब्द की 1:22 से 25 आवश्यकताओं को डब किया है, और जैसा कि अध्याय 1 में इनमें से कई उपइकाइयों या पैराग्राफों में मामला है, वह एक उपदेश के साथ शुरू होता है जिसे वह फिर प्रमाणित करने के लिए आगे बढ़ता है। हमारे यहां भी इसी प्रकार की घटना है।

बेशक, उपदेश श्लोक 22 में पाया जाता है, लेकिन वचन पर चलने वाले बनें और यहां केवल अपने आप को धोखा न दें। अब ध्यान दें कि वह इस उपदेश के भीतर एक विरोधाभास में संलग्न है। वह उपदेश के सकारात्मक पहलू से शुरू करता है, वचन के कर्ता बनो, और फिर इसके विपरीत के माध्यम से, यह वास्तव में एक प्रकार का सहसंबंधी विरोधाभास है, नकारात्मक रूप से, यहाँ ही नहीं, फिर स्वयं को धोखा देने वाले सहभागी वाक्यांश द्वारा संशोधित किया जाता है।

यहाँ, धोखा देने वाला शब्द पैरालोगिज़ोमाई है। पद 16 में हमने जो कहा था, उससे यह धोखा से एक अलग शब्द है, जो कि प्लैनाओ है, और वह पद 26 में अगले पैराग्राफ में धोखे के लिए एक अलग शब्द का उपयोग करेगा। फिर वह पद 23 से 25 तक इस उपदेश की पुष्टि करता है, और

वह नकारात्मक के बारे में बात करने से शुरू होता है, केवल एक श्रोता होने के बारे में, और फिर सकारात्मक, एक श्रोता और कर्ता होने के साथ समाप्त होता है।

तो, वह केवल उन लोगों की पुष्टि के संबंध में कहते हैं जो श्रोता हैं, क्योंकि यदि कोई वचन का सुनने वाला है और उस पर चलने वाला नहीं है, तो वह ऐसा है, बेशक यहां आपके पास तुलना है, वह उस आदमी की तरह है जो उसका पालन करता है दर्पण में प्राकृतिक चेहरा, और फिर वह आगे बढ़ता है और उस तुलना की पुष्टि करता है, क्योंकि वह खुद को देखता है और चला जाता है और तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा था। और फिर वह इसे सकारात्मक रूप से प्रमाणित करने के लिए वापस जाता है, उस व्यक्ति के संदर्भ में जो वचन का कर्ता है और न केवल एक श्रोता है, बल्कि वह जो सही कानून, स्वतंत्रता के कानून को देखता है, और दृढ़ रहता है, सुननेवाला भूल नहीं जाता, परन्तु करनेवाला जो काम करता है, वह अपने काम में धन्य होगा। और, निःसंदेह, आप देखेंगे कि यहाँ आपके पास चियास्म द्वारा प्रबलित पुष्टि है।

वह उपदेश में सकारात्मक से, सकारात्मक से शब्द के कर्ता-धर्ता से नकारात्मक की ओर जाता है, न कि केवल सुनने वालों की ओर, और फिर पुष्टि में, वह क्रम को उलट देता है, नकारात्मक से शुरू करता है, क्योंकि जो केवल सुनता है वह उस व्यक्ति की तरह है जो देखता है दर्पण में उसका प्राकृतिक चेहरा, लेकिन वह जो सुनता है और करता है, अर्थात् स्वतंत्रता के पूर्ण नियम को देखता है और दृढ़ रहता है, भूलने वाला श्रोता नहीं, भूलने वाला श्रोता, बल्कि कार्य करने वाला होता है, वह होगा अपने अभिनय में धन्य हैं. तो, एबीबीए, यह चियास्म जो हमारे यहां है, और निश्चित रूप से, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, चियास्म आम तौर पर पहले और आखिरी तत्वों पर जोर देता है, और निश्चित रूप से, वह यहां एक सकारात्मक बात पर जोर देना चाहता है, शब्द के कर्ता होने का उपदेश, जो इस अनुच्छेद को प्रारंभ और समाप्त करता है। अब फिर से, इस मामले में धोखे की धारणा, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, पैरालोगिज़ोमाई, पैराग्राफ की शुरुआत में दिखाई देती है।

श्लोक 16 में भी यही स्थिति थी, और श्लोक 26 में भी यही स्थिति होगी। और, वैसे, इसका विरोधाभास, इसका नकारात्मक परिणाम, यह जान लें, श्लोक 19 में पूर्ववर्ती पैराग्राफ की शुरुआत में दिखाई देता है। यहाँ, धोखे में अपने उद्धार के बारे में स्वयं को धोखा देना और मोक्ष के लिए क्या आवश्यक है, शामिल है।

जैसा कि वह श्लोक में कहेंगे, जैसा कि हम श्लोक 21 के कारण ऐसा कहते हैं, नम्रता से उस प्रत्यारोपित शब्द को प्राप्त करें जो आपकी आत्माओं को बचाने में सक्षम है, लेकिन वचन पर चलने वाले बनें और सुनने वाले नहीं, केवल अपने आप को धोखा दें। पुनः, सन्दर्भ में, यह धोखा स्वयं के उद्धार और मुक्ति के लिए क्या आवश्यक है, के बारे में प्रतीत होता है। और निःसंदेह, यह अनुमान लगाता है कि वह 2:14 में क्या कहेगा, मेरे भाइयों, इससे क्या लाभ होगा यदि कोई व्यक्ति कहे कि उसमें विश्वास तो है, परन्तु कर्म नहीं? क्या उसका विश्वास उसे बचा सकता है? अब, निःसंदेह, आपके पास यहां श्लोक 21 के अंत के साथ एक विरोधाभास है, जो कि, निःसंदेह, आरएसवी में, शब्द द्वारा इंगित किया गया है।

यह वास्तव में दा है, जो ग्रीक में एक हल्का संयोजक है, लेकिन आरएसवी इसका अनुवाद 'लेकिन' के रूप में करता है, जिससे पता चलता है कि श्लोक 22 में वह जो कुछ कहता है वह वास्तव में पिछली सामग्री में वह जो कह रहा है उसके विपरीत है। मुझे लगता है कि यदि वास्तव में आपके यहां विरोधाभास है, जैसा कि आरएसवी इसे लेता है, तो इसमें एक विरोधाभास शामिल है, इसमें श्लोक 21 की संभावित गलत व्याख्या या संभावित गलत अर्थ के साथ विरोधाभास शामिल है, और श्लोक 19 का संभावित गलत अर्थ भी शामिल है, जहां श्लोक 19 में है हम पढ़ते हैं, हर किसी को पढ़ने दो, हर आदमी सुनने के लिए तत्पर हो। जैसा कि हमने वहां उल्लेख किया है, एक बात के लिए, परमेश्वर के वचन को सुनने की जल्दी।

और साथ ही, उस पैराग्राफ के अंत में, श्लोक 21 में, नम्रता के साथ उस प्रत्यारोपित शब्द को ग्रहण करें जो आपकी आत्माओं को बचाने में सक्षम है। श्लोक 19 से 21 तक पाठक के लिए यह निष्कर्ष निकालना संभव होगा कि क्या है, क्या है, क्या आवश्यक है, शायद एकमात्र चीज जो आवश्यक है, वह है, है, है, वचन सुनना है, होना सुनने में तेज और वचन को ग्रहण करने के कार्य को समझने में तेज, उस पर कार्य करने या करने के किसी भी संदर्भ के बिना केवल वचन सुनने जैसा। तो, श्लोक 19 से 21 तक यह संभावित गलत अर्थ है जिसे वह यहां विरोधाभास के माध्यम से सही करता प्रतीत होता है।

अब इस श्रवण में केवल वचन सुनने से कहीं अधिक शामिल है। इसमें वचन को सत्य के वचन के रूप में स्वीकार करना शामिल है, श्लोक 18 और 21, कोई कह सकता है, इस पर सतही, धार्मिक सहमति देता है। यह अध्याय 2 के श्लोक 19 की आशा करता है, आप विश्वास करते हैं कि ईश्वर एक है, आप अच्छा करते हैं, यहां तक कि राक्षस भी विश्वास करते हैं और कांपते हैं।

जैसा कि हम उस बिंदु पर पहुंचने पर देखेंगे, इसका संबंध पंथ की पुष्टि से है, यह विश्वास करना कि ईश्वर एक है, पंथ बनाना और पंथ के कथन की पुष्टि करना कि ईश्वर एक है, और वास्तव में इसे एक बिंदु तक स्वीकार करना, एक बिंदु तक इसे स्वीकार करना, शब्द को सत्य के शब्द के रूप में स्वीकार करना, शब्द को पंथिक सहमति देना, सत्य का शब्द होना, एक बिंदु तक इसे सत्य के शब्द के रूप में स्वीकार करना। जब वह केवल वचन के श्रोता होने के बारे में बात करते हैं, लेकिन इसकी सच्चाई को हमारे बुनियादी दृष्टिकोण को बदलने या हमारे व्यवहार को प्रभावित करने की अनुमति देने से इनकार करते हैं, खासकर जीवन की चुनौतियों के बीच, तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनके मन में यही बात है। अब वह वास्तव में 2:14 से 17 तक इस बिंदु पर वापस आने वाला है।

हे मेरे भाइयों, लाभ क्या हुआ, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है, परन्तु काम नहीं करता, तो क्या उसका विश्वास उसे बचा सकता है? और वैसे, यहां जिस शब्द का अनुवाद किया गया है, वह शब्द का कर्ता होने के नाते, काव्यात्मक है, लेकिन, कम से कम अवधारणा के संदर्भ में, काम करने, करने या काम करने की धारणा से संबंधित है। हे मेरे भाइयों, भविष्यद्वक्ता क्या है, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास तो है, परन्तु कर्म नहीं, तो क्या उसका विश्वास उसे बचा सकता है? यदि कोई भाई या बहिन बुरे वस्त्र पहने और उसके पास प्रतिदिन भोजन की कमी हो, और तुम में से कोई उन से कहे, शान्ति से जाओ, गरम रहो, और तृप्त रहो, और उन्हें शरीर के लिये आवश्यक वस्तुएं न दो, तो इससे क्या लाभ? इसलिए, विश्वास अपने आप में, यदि इसमें कोई कार्य नहीं है,

मरा हुआ है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि मुझे लगता है कि यहां उनके मन में वचन की सच्चाई को हमारे बुनियादी दृष्टिकोण को बदलने या हमारे व्यवहार को प्रभावित करने की अनुमति देने से इनकार करने की धारणा है।

इस अनुच्छेद की संरचना, विशेष रूप से श्लोक 21 से श्लोक 22 और निम्नलिखित का संबंध, और विशेष रूप से श्लोक 25, लेकिन वह जो पूर्ण कानून, स्वतंत्रता के कानून को देखता है और दृढ़ रहता है, कोई श्रोता नहीं है जो भूल जाता है, लेकिन जो कर्ता कार्य करता है, वह अपने कार्य में धन्य होगा। इस परिच्छेद की संरचना से तात्पर्य उस मुक्ति से है, जिससे उसका तात्पर्य वर्तमान मुक्ति से है, जो अंतिम, युगान्तकारी, या अंत समय की मुक्ति की ओर इशारा करती है। मैं वर्तमान उद्धार कहता हूँ क्योंकि वह शब्द को स्वतंत्रता के कानून के रूप में, जैसे, जैसे, जैसे, शब्द से संबंधित करने के इस व्यवसाय के बारे में बात करता है, वह कानून जो अब मुक्त करता है, जो अभी उद्धार करता है, वह अब आज्ञादी देता है। लेकिन साथ ही, जब वह यहां अंत में कहता है, वह व्यक्ति अपने काम में धन्य होगा, तो वह आमतौर पर, जेम्स, अंत समय या युगांत संबंधी मोक्ष का उल्लेख करने के लिए धन्य भाषा का उपयोग करता है, जैसा कि वह पहले से ही 1:12 में कर चुका है।

धन्य है वह मनुष्य, धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में खरा उतरता है, क्योंकि जब वह परीक्षा में खरा उतरेगा, तो उसे जीवन का वह मुकुट मिलेगा जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उन लोगों से की है जो उससे प्रेम करते हैं। और फिर, 5:11 में, उसी तरह की बात, जहां वह कहता है, देखो, हम, हम, हम उन लोगों को धन्य कहते हैं जो दृढ़ थे, आपने अय्यूब, अय्यूब की दृढ़ता को सुना है, और इसके उद्देश्य को देखा है भगवान, भगवान कितने दयालु और दयालु हैं, इस तथ्य की ओर इशारा करते हुए कि अय्यूब शुरुआत की तुलना में अंत में बेहतर था। इसलिए, भविष्य के युगांत-संबंधी अंत-समय के उद्धार की आशीष का उल्लेख करने के लिए जेम्स यहां लगातार धन्य भाषा का उपयोग करता है।

फिर वह इंगित करता है कि वचन का कर्ता होने में वर्तमान मोक्ष शामिल है, अर्थात्, वर्तमान जीवन में स्वतंत्रता, स्वतंत्रता और बुराई के बंधन से मुक्ति का अनुभव करना, लेकिन फिर जीवन के अंत में आने वाले जीवन की ओर आशीर्वाद भी शामिल है। वह, वह, वह, वह, वह, वह, मोक्ष, वह यहां कहता है, वर्तमान और भविष्य दोनों कर्म के माध्यम से मध्यस्थ हैं। वास्तव में आपके व्यवहार का पवित्र चरित्र यहां वचन का श्रोता नहीं, बल्कि वचन का कर्ता होने के माध्यम से क्रिया के माध्यम से मध्यस्थ होता है।

वह करने की प्रक्रिया में ही मोक्ष का अनुभव करता है। यदि कोई कर्ता नहीं है तो उसकी मुक्ति नहीं होती। अब, श्लोक 23 से 25 में दर्पण के संबंध में चित्रण से इसकी पुष्टि होती है।

इस परिच्छेद की व्याख्या में एक मुद्दा है कि क्या यह एक दृष्टांत है या रूपक है, लेकिन वास्तव में, मुझे लगता है कि वह अंतर या वह अंतर, वास्तव में कई विद्वानों की ओर से यहाँ अतिरंजित है क्योंकि, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है इस वीडियो प्रस्तुति में, एक दृष्टान्त, दृष्टान्त जैसा कि नए नियम में उपयोग किया गया है, और वैसे, आपको यह दृष्टान्त पुराने नियम में भी मिलता है। मैं आपको शायद पुराने नियम के सबसे प्रसिद्ध दृष्टान्त का उल्लेख कर रहा हूँ, अमीर आदमी

और गरीब आदमी और उसके और उसके मेमने का दृष्टांत, कि नाथन ने 2 सैमुअल के 12वें अध्याय में डेविड से बात की थी, यह एक दृष्टांत है इसका एक मुख्य बिंदु है, जो इस संभावना को बाहर नहीं करता है कि विवरणों के अपने स्वयं के आध्यात्मिक समकक्ष हैं। लेकिन बाइबल में, दृष्टांतों में एक मुख्य बिंदु होता है, और विवरण में अक्सर आध्यात्मिक समकक्ष होते हैं जो उस मुख्य बिंदु का समर्थन या वृद्धि करते हैं।

और वास्तव में आपके पास यही है। इसलिए, मुझे लगता है कि आपके पास एक दृष्टांत है जो वास्तव में बाइबिल के दृष्टांतों के संदर्भ में, पुराने नियम और नए दोनों में, जो हम परिचित हैं, उसके संदर्भ में रूपक पहलुओं की अपेक्षा करता है। इसलिए मुझे लगता है कि इसे, इस दृष्टांत को एक दृष्टान्त के रूप में देखना बेहतर होगा जिसमें कुछ रूपक तत्व हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि, यहां कुछ विवरण हमारे जीवन में या उस व्यक्ति के जीवन में कुछ वास्तविकताओं की ओर इशारा करते हैं जो दर्पण में देखता है और या तो चला जाता है, भूल जाता है, या चला जाता है और उसमें दिखाई देता है और कार्य करता है। अब, के अनुसार, हमारे पास चित्रण की यह समझ है, मुद्दा यह है: दर्पण में अपने प्राकृतिक चेहरे को देखने, गंदगी या अन्य खामियों को देखने का कोई मतलब नहीं है जिन्हें ठीक किया जा सकता है, केवल बिना दूर चले जाना इसके बारे में कुछ भी कर रहे हैं। यदि कोई ऐसा ही करता है, तो सबसे पहले दर्पण में क्यों देखें? इसका कोई मतलब नहीं है क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

इसी तरह, जो व्यक्ति कानून को देखते हैं, वे निश्चित रूप से अपने प्राकृतिक चेहरे को नहीं, बल्कि अपने आध्यात्मिक चेहरे को देखते हैं, दोनों अपनी अपर्याप्तता में वे कौन हैं और भगवान ने उन्हें क्या बनाया है और उनसे उनकी क्षमता में होने की उम्मीद करते हैं। यदि वे केवल देखने से अधिक करते हैं, कटानो'ओ, जो इस संदर्भ में त्वरित नज़र से संबंधित है, यदि वे केवल कानून को देखने से अधिक करते हैं, लेकिन उसमें झांकते हैं, तो यहां शब्द परकुष्टो है, जिसका वास्तव में अर्थ है झुकना नीचे और नीचे झुकना और ध्यान से और लगातार और एक स्थायी तरीके से देखना, अगर वे इसमें झांकते हैं, तो इसे अभ्यास में डालकर अपने चरित्र के सार को आकार देने की अनुमति देते हैं, और इससे भी अधिक, जो अनुमति देते हैं उन्होंने वास्तव में अपने संपूर्ण आचरण को निर्धारित करने के लिए देखा है, वे धन्य होंगे। अर्थात्, वे अपने कार्य की प्रक्रिया में या अपने कार्य के आधार पर मोक्ष का अनुभव करेंगे।

अब, हम ध्यान दें कि यहां कानून को स्वतंत्रता का एक आदर्श कानून के रूप में वर्णित किया गया है। यह एकदम सही है, यह जानते हुए कि, जेम्स पूरी किताब में टेलोस या परफेक्ट का उपयोग कैसे करता है, यह इस मायने में परफेक्ट है कि यह पूर्ण है। इसमें वह सब कुछ है जो मोक्ष के लिए आवश्यक है।

जेम्स वास्तव में भजन 19, श्लोक 7 की ओर इशारा कर रहा है, शायद यहां भी। प्रभु का कानून परिपूर्ण है, आत्मा को पुनर्जीवित करता है। प्रभु की गवाही निश्चित है, सरल लोगों को फिर से बुद्धिमान बनाना, ज्ञान की इस धारणा में बांधना जो जेम्स में बहुत प्रमुख है। और वैसे, निःसंदेह, आत्मा को बचाने का यह कार्य, भजन 19 से, श्लोक 21 में उठाया गया है, जो आपकी आत्माओं को बचाने में सक्षम है।

दूसरे शब्दों में, कानून इस मायने में परिपूर्ण है कि यह पूरी तरह से बचा सकता है। किसी को कुछ नहीं चाहिए; कोई भी पूरी तरह से बचा सकता है; किसी को इससे अधिक कुछ नहीं चाहिए। निःसंदेह, हम इस मुक्ति पर वापस जा रहे हैं कि मामला किस अर्थ में है। इस मुक्ति में अन्य बातों के अलावा, स्वतंत्रता या स्वतंत्रता, स्वतंत्रता का सही कानून शामिल है।

अब, बाद में अध्याय 2, श्लोक 12 में, जेम्स एक बार फिर कानून को परिपूर्ण के रूप में संदर्भित करेगा। वह यहाँ 2:12 में कहता है, वैसे ही बोलो और वैसे ही व्यवहार करो जैसा उन लोगों के अनुसार किया जाना है जिनका न्याय किया जाना है, क्षमा करें, श्लोक 12 में स्वतंत्रता के कानून के रूप में कानून की बात करता है, इसलिए उन लोगों की तरह बोलो और वैसे ही व्यवहार करो जिनका न्याय किया जाना है। स्वतंत्रता के कानून के तहत न्याय किया जाएगा। वह वहाँ कहता है, और यह, निश्चित रूप से, पद 8 पर भी वापस जाता है, यदि आप वास्तव में शाही कानून को पूरा करते हैं, तो शास्त्र के अनुसार, आप अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करेंगे, आप अच्छा करते हैं, जो इंगित करता है कि, जब वह बात करता है कानून को स्वतंत्रता का कानून होने के बारे में, वह संकेत दे रहा है कि कानून मुक्त करता है, कानून मुक्त करता है, कानून स्वतंत्रता देता है, लेकिन यह किससे मुक्ति देता है? ठीक है, 2:12 और 13 के अनुसार, निश्चित रूप से, यह निर्णय से स्वतंत्रता देता है, लेकिन उससे परे, यह आत्म-जुनून से स्वतंत्रता प्रदान करता है क्योंकि 2.12 में स्वतंत्रता का कानून उस बात से संबंधित है जो वह कहता है, जिसे वह शाही कहता है। 2.8 में कानून, शास्त्र के अनुसार, आपको अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करना चाहिए, आत्म-जुनून से मुक्ति ताकि कोई अपने पड़ोसी से सच्चा प्यार कर सके और पूरे कानून को पूरा कर सके।

अब, वैसे, अगर हम यहाँ इस अंश की व्याख्या करते हैं, श्लोक 1:22 से 25, जो वह 2:8 से 13 में कहता है, शाही कानून और स्वतंत्रता के कानून के संबंध में और वहाँ जैसा, हमने पाया कि वास्तव में वह जिस कानून के बारे में बात कर रहा है वह स्वतंत्रता का कानून है, वह कानून जो मुक्त करता है और वह कानून जो बचाता है, कि कानून मुक्त कर सकता है, कानून बचा सकता है, यदि वास्तव में, तो आप' मैं उस कानून के बारे में बात कर रहा हूँ जिसकी व्याख्या सुसमाचार में की गई है और जो इसमें पूरा हुआ है। इसीलिए 2:8 में, वह शाही कानून को पूरा करने के बारे में बात करता है, जैसा कि हम देखेंगे जब हम उस बिंदु पर पहुंचेंगे, राजा का कानून, राजा यीशु ने इसे फिर से परिभाषित किया है और इसकी घोषणा की है, प्रेम आदेश के साथ केंद्र में, जिसकी पूर्ति की संभावना विश्वास में सुसमाचार को स्वीकार करने से आती है, क्योंकि आप सभी हमारे प्रभु यीशु मसीह, महिमा के प्रभु का विश्वास रखते हैं। उस अर्थ में, कानून सत्य का शब्द है जो नया जन्म पैदा करता है और जो किसी को वास्तव में रोकता या रोकता है, और वास्तव में उसे उन सभी चीजों से मुक्त करता है जो उसे अपने पड़ोसी से सच्चा प्यार करने और इस तरह कानून को पूरा करने से रोकता या रोकता है।

अतः कानून आदेश ही नहीं, पालन करने की क्षमता भी प्रदान करता है। लेकिन एक बार फिर, यह एक ऐसा कानून है जिसे मसीह ने अपनाया, जैसा कि मसीह ने व्याख्या की, जैसा कि मसीह ने घोषित किया, और जैसा कि मसीह ने इसे पूरा किया, जो हमारे अंदर क्रियाशील या साकार हो जाता है जैसे ही हम मसीह में विश्वास करते हैं, जैसे ही हम विश्वास रखते हैं एक को हमारे प्रभु

यीशु मसीह का। यह स्वार्थ के बंधन से मुक्त होकर आज्ञा मानने की क्षमता प्रदान करता है जो व्यक्तियों को कानून का पालन करने से रोकता है।

अब, वह आगे बढ़ता है और शब्द के धर्म के बारे में बात करते हुए इसे 126 से 27 तक पूरा करता है। यदि कोई अपने आप को धार्मिक समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न लगाए, परन्तु अपने हृदय को धोखा दे, तो उस मनुष्य का धर्म व्यर्थ है। परमेश्वर और पिता के निकट पवित्र और निष्कलंक धर्म यह है, कि अनाथों और विधवाओं के दुःख में उनकी सुधि लेना, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखना।

तो, यहाँ, निश्चित रूप से, आपके पास मूल रूप से यह मार्ग सच्चे बनाम व्यर्थ धर्म के बीच विरोधाभास के अनुसार संरचित है। और वह झूठे धर्म के बारे में एक बार फिर, धोखे या अपने दिल को धोखा देने के मामले में बात करता है। यदि कोई सोचता है कि वह धार्मिक है और अपनी जीभ पर लगाम नहीं लगाता बल्कि अपने दिल को धोखा देता है, तो यहाँ फिर से धोखे के लिए तीसरा ग्रीक शब्द है, अपाटाओ, यहाँ।

इस आदमी का, इस व्यक्ति का धर्म व्यर्थ है। कहने का तात्पर्य यह है कि, यह बेकार है, यह खोखला है, और यह बेकार है, जैसा कि वे कहते हैं यदि वह अपनी जीभ पर लगाम नहीं लगाता बल्कि अपने दिल को धोखा देता है। यहाँ, वैसे, निश्चित रूप से, वह इस धारणा का परिचय देता है, ठीक है, उसने वास्तव में इसे श्लोक 19 से 21 में पहले ही पेश कर दिया है, लेकिन वह बहुत ही संक्षिप्त तरीके से जीभ के उपयोग की धारणा को फिर से प्रस्तुत करता है, और श्लोक 26 स्वयं ही इसका परिचय देगा। विशेष रूप से 3:1 से 12 तक विशेषीकृत किया जा सकता है, जहाँ वह वास्तव में, फिर से, थोड़ा और लगाम और इसी तरह के पूरे व्यवसाय का उपयोग करता है, जीभ से बोलना।

यहाँ इसकी तुलना सच्चे धर्म से की गई है, और यहाँ, निस्संदेह, उनका तात्पर्य है कि सच्चे धर्म में धोखा नहीं दिया जाना शामिल है, बल्कि शुद्ध और निष्कलंक होना शामिल है, जो कि अनाथों के दुःख में उनके पास जाने और अनाथों और विधवाओं के पास जाने के संदर्भ में व्यक्त किया गया है। क्लेश और स्वयं को संसार से बेदाग रखना। अब, एक बार फिर, हमारा जोर आत्म-धोखे पर है। हम इससे आश्चर्यचकित नहीं हैं।

यह वह है जो छंद 16 को एकीकृत करता है, उन चीजों में से एक जो छंद 16 से 27 को एकीकृत करता है। वह अब भगवान के उद्देश्यों के बारे में धोखे से आगे बढ़ता है, छंद 16, यह धोखे की पहली अभिव्यक्ति है, भगवान के उद्देश्यों के बारे में धोखा, छंद 16, भगवान के तरीकों के बारे में धोखे की ओर, मोक्ष के लिए ईश्वर की विधि, श्लोक 22, ईश्वर की स्वीकृति के बारे में धोखे के लिए, अब श्लोक 26 में। यहाँ, ईश्वर को क्या स्वीकार्य है और ईश्वर क्या अपेक्षा करता है, इस संबंध में हमें धोखा दिया गया है।

यहाँ, जेम्स वास्तव में, जब वह यहाँ धार्मिक शब्द का परिचय देता है, और यह वास्तव में थ्रेसकोस है, यहाँ, धर्म की धारणा को प्रस्तुत करके, जेम्स सार्वभौमिक धार्मिक प्रकृति, सभी मनुष्यों में धार्मिक भावना, और धार्मिक प्रकृति, धार्मिक की अपील कर रहा है। वह भावना जो किसी न

किसी रूप में, किसी न किसी हद तक, सभी मानव समाजों में मौजूद है, और उस मामले के लिए, सभी मनुष्यों में, और वैसे, कोई वास्तव में धर्मनिरपेक्षता को भी इसके धार्मिक पहलुओं के रूप में देख सकता है ताकि यहां तक कि धर्मनिरपेक्षता और धर्मनिरपेक्षतावादी मानवता के धार्मिक आवेग और धार्मिक चरित्र से दूर नहीं जा सकते हैं, लेकिन सभी मनुष्यों में धार्मिक प्रकृति और धार्मिक भावना के केंद्र में भगवान को प्रसन्न करने की इच्छा है, जो मूल रूप से धर्म में शामिल है। यह ईश्वर को प्रसन्न करने का आवेग है, विशेष रूप से धार्मिक कृत्यों के प्रदर्शन के संदर्भ में, और यही वास्तव में थ्रेसकोस शब्द का महत्व है, धार्मिक कृत्यों का प्रदर्शन। अब, चूंकि इस प्रकार के धर्म का लक्ष्य ईश्वर को प्रसन्न करना है, ईश्वर को स्वीकार्य होना है, इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि यह धर्म ईश्वर को स्वीकार्य हो और इससे उसे फर्क पड़े।

यह पता लगाना बिल्कुल विनाशकारी होगा कि किसी का धर्म खोखला या व्यर्थ है, अर्थात्, जहां तक ईश्वर का संबंध है, बेकार है। यहाँ व्यर्थ का यही अर्थ है। इस आदमी का धर्म व्यर्थ है क्योंकि इससे ईश्वर पर कोई फर्क नहीं पड़ता; यह ईश्वर को स्वीकार्य नहीं है, यह ईश्वर को प्रसन्न नहीं करता है, इससे ईश्वर को कोई फर्क नहीं पड़ता है और जहां तक ईश्वर का संबंध है यह बेकार है।

अब, यद्यपि जेम्स अपनी भाषा में सांस्कृतिक कृत्यों पर जोर देता है और सांस्कृतिक प्रकार की भाषा, थ्रेसकेस, धार्मिक, थ्रेसकिया, धर्म, कथारोस, शुद्ध का उपयोग करता है, यह वास्तव में एक प्रकार की सांस्कृतिक भाषा है, यानी इसमें शुद्धि या शुद्ध होना शामिल है ईश्वर को स्वीकार्य होने का भाव, पूजा में ईश्वर तक पहुंच होना, और अमियान्टो, शुद्ध और निष्कलंक होना। याद रखें कि पुराने नियम की सांस्कृतिक प्रणाली में ईश्वर के समक्ष निष्कलंक बलिदानों की आवश्यकता आदि के बारे में निष्कलंक भाषा कितनी सर्वव्यापी है। तो, यह सब वास्तव में सांस्कृतिक भाषा है।

वह वास्तव में यहां सांस्कृतिक भाषा का उपयोग करता है, लेकिन वह इसे इस तरह से उपयोग करता है जैसे कि यह सुझाव देता है कि धर्म को सांस्कृतिक रूप से नहीं समझा जाना चाहिए, यानी अनौपचारिक, अनौपचारिक, अनुष्ठान के अनौपचारिक कार्य और इसी तरह। लेकिन ऐसा कहने के बाद, यह मामला भी है, और वैसे, इसमें जेम्स द्वारा इस तरह की भाषा का उपयोग करने में शामिल हो सकता है, कि वह हो सकता है, कि यह कुछ ऐसा सुझाव दे सकता है, जैसा कि मैं कहता हूं, वैसे भी स्पष्ट रूप से सच है, कि जेम्स यहाँ अनुष्ठान के विरुद्ध नहीं बोल रहे हैं। वह वास्तव में अनुष्ठान के खिलाफ विवाद में शामिल नहीं हो रहा है, हालांकि, जैसा कि मैं कहता हूं, ये शब्द अक्सर अनुष्ठान कृत्यों पर जोर देते हैं, और वह उनका उपयोग करता है, जैसे वह उन्हें नियोजित करता है, वह देता है, वह देता है, वह उनके बारे में व्यवहार, कविता में बात करता है, यह उन्हें व्यवहारिक बनाम धार्मिक प्रकार की सामग्री देता है।

वह रीति-रिवाज के विरुद्ध नहीं बोल रहे हैं; ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है कि वह ऐसा है, लेकिन वह संकेत दे रहा है कि सच्चे धर्म का सार अनुष्ठान या धार्मिक या पवित्र गतिविधियों में नहीं बल्कि व्यवहार में पाया जाता है, और विशेष रूप से दया के कृत्यों के संदर्भ में समझा जाने वाला व्यवहार, एक प्रकार का लगाम है वह जीभ जो अनुचित रिश्ते और घृणित रिश्ते और अन्य व्यक्तियों के साथ गुस्से वाले रिश्ते की गंदगी का विरोध करती है, जो अनुचित भाषण में अभिव्यक्ति के लिए आती है, और वह नकारात्मक है, और फिर दया के कृत्यों के संदर्भ में



सकारात्मक है। ईश्वर की आराधना उस सभा तक ही सीमित नहीं है जहां शब्द सुना जाता है। यह, एक अर्थ में, वास्तव में वही है जो उन्होंने श्लोक 22 में कहा था, वचन पर चलने वाले बनो, न कि केवल सुनने वाले।

किसी उपासक समुदाय का हिस्सा बनने और वचन सुनने के लिए सभा में होना पर्याप्त नहीं है। ईश्वर की आराधना केवल उस सभा तक ही सीमित नहीं है जहां वचन सुना जाता है, बल्कि वहां भी इसे व्यवहार में लाना आवश्यक नहीं है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि, अध्याय दो की शुरुआत में, अगले ही अनुच्छेद में, वह एक ईसाई सभा का, ईसाई पूजा का एक परिदृश्य देने जा रहा है, जहां पूजा के ठीक बीच में, आपके पास एक है गरीबों को बदनाम करना और उन्हें शर्मिंदा करना, जो निस्संदेह, वहां की जा रही पूजा का खंडन करता है।

वह सभा जहाँ बात तो सुनी जाती है परन्तु आचरण में नहीं लाया जाता। भगवान की पूजा सभा तक ही सीमित नहीं है और निश्चित रूप से नहीं है, यह सभा में नहीं पाई जाती है जहां शब्द केवल सुना जाता है लेकिन व्यवहार में नहीं लाया जाता है बल्कि जीवन की भट्टी में डाला जाता है जहां यह किया जाता है। ईश्वर की पूजा केवल सभा तक ही सीमित नहीं है बल्कि जीवन की भट्टी में होती है जहां यह की जाती है।

अब, यहाँ सच्चे धर्म में, इस परिच्छेद के अनुसार, चार चीज़ें शामिल हैं। इसमें, सबसे पहले, जैसा कि वे कहते हैं, एक लगाम भरी जीभ शामिल है। हम इसके बारे में और अधिक तब कहेंगे जब हम अध्याय तीन और चार पर पहुंचेंगे, लेकिन वह इसे चुनेंगे, वह इसे अध्यायों में उठाएंगे, अध्याय तीन में, जहां वह, जहां वह वहां से संबंधित है, वह वहां इस व्यवसाय से संबंधित है घोड़े के मुँह में जीभ को टुकड़ों में नियंत्रित करना, घोड़े के मुँह में, जिसमें घोड़े के पूरे शरीर पर लगाम लगाना शामिल है।

साथ ही, वह धर्म शुद्ध और निष्कलंक है। अब, यह, निश्चित रूप से, जेन्स में एकता और पूर्णता, मिश्रण या मिश्र धातु की कमी, शुद्ध और निर्मलता की आवर्ती चिंता की ओर इशारा करता है। यह सांस्कृतिक शुद्धता और पंथ में दोषहीनता के अंतिम उद्देश्य का सुझाव देता है, वास्तव में, शुद्ध और निष्कलंक जीवन की ओर इशारा करता है।

यह आवश्यक है, यह शुद्ध और निष्कलंक होने का कार्य है, यह आवश्यक है क्योंकि ईश्वर एक है और परिपूर्ण है। उसकी विशेषता एकता और संपूर्णता, शुद्ध और निष्कलंक होना भी है, और इसलिए उपासक, यदि उपासक ईश्वर का सच्चा उपासक बनना चाहता है, तो उसे ईश्वर के चरित्र को एक और परिपूर्ण के रूप में साझा करना होगा। अस्तित्व के रूप में, शुद्ध और निष्कलंक होने के रूप में, एकता और पूर्णता की विशेषता के रूप में।

इस प्रकार, शुद्ध और निष्कलंक धर्म से कम कुछ भी ईश्वर को अस्वीकार्य है। अब, यह विशेष रूप से सुनने और करने के बीच अंतर की ओर इशारा करता है। शुद्ध और निष्कलंक का संबंध, फिर से, अशुद्ध होने से है, यानी, शब्द का श्रोता होना लेकिन कर्ता नहीं होना।

विडंबना यह है कि सांस्कृतिक भाषा का उपयोग यह इंगित करने के लिए किया जाता है कि पंथ या धार्मिक गतिविधि पर्याप्त नहीं है। जो चीज़ किसी व्यक्ति को अशुद्ध बनाती है वह औपचारिक

अपर्याप्तता नहीं है, बल्कि औपचारिक शुद्धता की चिंता है जो सामान्य व्यवहार की उपेक्षा करती है। अब, निःसंदेह, यह वास्तव में यहाँ सच्चे धर्म के तीसरे घटक की ओर ले जाता है, न केवल दुल्हन की भाषा और शुद्ध और निष्कलंक बल्कि विधवाओं और अनाथों से मिलने जाना भी।

अब, निःसंदेह, यहाँ मुलाक़ात शब्द का उपयोग पुराने नियम के मुलाक़ात के अर्थ में उनकी सहायता करने, मदद करने और उनकी देखभाल करने के लिए उपस्थित होने के अर्थ में किया गया है। यहां तक कि पुराने नियम में भगवान अपने लोगों को बचाने या बचाने के लिए उनसे मिलने जाते हैं, जिसमें निस्संदेह, अपने लोगों के प्रति यहोवा की वाचापूर्ण कार्रवाई शामिल है, वास्तव में ईसाइयों के एक-दूसरे के प्रति वाचा संबंधी दायित्व की ओर इशारा करता है। वैसे, यह एक बार फिर इस विचार को आगे बढ़ाता है कि भगवान की उचित पूजा करने का अर्थ है एक चरित्र को अपनाना या एक चरित्र का पोषण करना, एक चरित्र को व्यक्त करना, एक ऐसे चरित्र को प्रदर्शित करना जो भगवान के चरित्र के समान है।

निस्संदेह, विधवाएँ और अनाथ, गरीबों और उत्पीड़ितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह आम तौर पर गरीबों और उत्पीड़ितों के बारे में बात करने का एक तरीका है, न कि केवल विधवाओं और अनाथों के बारे में, बेशक, इसमें वे भी शामिल होंगे। यह वास्तव में ईश्वर और पिता के रूप में ईश्वर की स्थिति का एक निहितार्थ है।

श्लोक 27, वह धर्म जो ईश्वर और पिता के समक्ष शुद्ध और निष्कलंक है। कहने का तात्पर्य यह है कि, वह एक ईश्वर है जिसने गरीबों और जरूरतमंदों सहित सभी को बनाया है, और इस प्रकार गरीबों और जरूरतमंदों सहित सभी का पिता है, और एक पिता के रूप में उन लोगों की भलाई के प्रति प्रतिबद्धता है जिन्हें उन्होंने बनाया है. आप ईश्वर की ईश्वर के रूप में, निर्माता ईश्वर के रूप में पूजा नहीं कर सकते हैं, और उनकी मानव रचना की जरूरतों पर ध्यान नहीं दे सकते हैं, जो कि धर्मग्रंथ के अनुसार सृष्टि का उच्चतम क्रम है।

तुम पूजा नहीं कर सकते ; आप वास्तव में ईश्वर, जो कि पिता है, के सभी मानव प्राणियों की प्रेमपूर्ण देखभाल के संदर्भ में उसके उपासक नहीं हो सकते हैं, यदि वास्तव में, आप उसके सभी प्राणियों के लिए उसकी सक्रिय, प्रेमपूर्ण देखभाल को साझा नहीं करते हैं। और फिर, अंततः, सच्चे धर्म के इस व्यवसाय में, जैसा कि जेम्स ने इसे विकसित किया है, इसमें खुद को दुनिया से बेदाग, दुनिया से बेदाग रखना शामिल है। अब, फिर से ध्यान दें कि हमारे यहां कॉष्टिक भाषा का उपयोग किया जा रहा है, जो दुनिया से बेदाग है।

एस्पिलोस का उपयोग किया जाता है। और हम यहां व्यंग्य के तत्व पर भी ध्यान देते हैं। स्वयं को संसार से बेदाग रखने का अर्थ समाज से विमुख होना नहीं है।

उन्होंने सिर्फ अनाथों और विधवाओं से उनके दुःख में मिलने की बात की। इसका मतलब यह नहीं कि प्रकट का मतलब समाज से अलग होना नहीं है। इसमें तपस्या या पलायनवाद शामिल नहीं है बल्कि समाज में भागीदारी शामिल है।

यह परिच्छेद निश्चित रूप से उस कथन के विरुद्ध खड़ा है, जो अल्फ्रेड नॉर्थ व्हाइटहेड का प्रसिद्ध कथन है, जिसमें कहा गया है कि धर्म वह है जो एक व्यक्ति अपने अकेलेपन में करता है। यहाँ

संसार का प्रयोग जेम्स द्वारा बुराई के प्रति और ईश्वर के विरुद्ध हान स्वभाव के अर्थ में किया गया है। दुनिया में इस वर्तमान दुनिया की चीजों से खुद को जोड़ने या रखने में सुरक्षा खोजने की प्रवृत्ति शामिल है।

इसमें एक सुरक्षा, एक सुरक्षा खोजना या इस वर्तमान दुनिया में सुरक्षा स्थापित करना। इस तरीके का मतलब है खुद को दुनिया से बेदाग रखना ताकि भनक तक न लगे। एक बार फिर, बेदाग होने का यह व्यवसाय कोई मामला नहीं है; यह पूरी तरह से सांसारिक होने का मामला नहीं है।

कुल मिलाकर, जेम्स मुख्य रूप से उन लोगों से चिंतित नहीं है जो पूरी तरह से सांसारिक हैं, बल्कि वे लोग हैं जो एक ही समय में दुनिया के दोस्त और भगवान के दोस्त बनने का प्रयास करते हैं। उसके निशाने पर ऐसे लोग नहीं हैं जो पूरी तरह से बुराई को अपनाते हैं, बल्कि वे लोग हैं जो ऐसा करना चाहते हैं, जो एक ही समय में बुराई और अच्छाई दोनों को अपनाते हैं, जो इस तरह से विभाजित हैं। और यहां वह ऐसे लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो दागदार हैं।

वे पूरी तरह से धर्म से रहित नहीं हैं, लेकिन वे धर्म को जोड़ना चाहते हैं, यानी, व्यवहार जो भगवान के साथ स्वीकार्य है, उन प्रतिबद्धताओं के साथ जो उसके खिलाफ खड़े हैं, जो भगवान के प्रति उस प्रतिबद्धता के खिलाफ खड़े हैं। वे भगवान को प्रसन्न करने, भगवान का अनुसरण करने और भगवान की आज्ञा मानने में सुरक्षा खोजने की कोशिश करते हैं, बल्कि दुनिया में विश्वास और विश्वास में भी सुरक्षा खोजने की कोशिश करते हैं। तो, वास्तव में सच्चे धर्म की सामग्री यह है, इसमें नैतिक जिम्मेदारी का एक ढांचा शामिल है जिसमें भगवान, स्वयं, दूसरों और दुनिया शामिल है।

वास्तव में, धर्म का संबंध मुख्य रूप से ईश्वर के साथ किसी के रिश्ते से है, लेकिन ईश्वर के साथ किसी का रिश्ता दूसरों के साथ, खुद के साथ और विशेष रूप से दुनिया के साथ, और विशेष रूप से दुनिया के जरूरतमंदों के साथ उसके रिश्ते से निर्धारित होता है। यहां राज्य बनाम वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य को अपनाने का आग्रह किया जा रहा है। ठीक है, ठीक है, यह वास्तव में हमें अध्याय एक के निष्कर्ष पर लाता है, जेम्स की पुस्तक में यह प्रस्ताव, और हमें वास्तव में आगे बढ़ने और अध्याय दो में जाने के लिए प्रेरित करता है।

अध्याय एक को पूरा करने के संदर्भ में हम वास्तव में यहां 40 मिनट से थोड़ा अधिक समय बिता चुके हैं। यह रुकने, विराम देने के लिए एक अच्छी जगह है, ताकि हम जेम्स के दूसरे अध्याय के साथ अगले खंड की शुरुआत में नए सिरे से शुरुआत कर सकें।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 19, जेम्स 1:22-27 है।